तत्त्वार्थसूत्र में विविधशास्त्र

-प्रो. वीरसागर जैन

तत्त्वार्थसूत्र शास्त्र नहीं, शास्त्रों का शास्त्र है, महाशास्त्र है; क्योंकि उसमें अनेक शास्त्र भरे हैं, अनेक ही नहीं, विविध शास्त्र भरे हैं। इसे यद्यपि बहुत विस्तार से स्पष्ट किया जा सकता है, तथापि अभी संक्षेप में ही कुछ दिखाने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार यद्यपि ये सभी विविध शास्त्र परस्पर अनुस्यूत भी हैं, परन्तु अभी उसकी भी चर्चा विस्तारभय से यहाँ नहीं करते हैं। अभी तो यहाँ हर विषय के केवल एक-एक दो-दो सूत्र ही प्रस्तुत करके इतना सिद्ध करते हैं कि इसमें किस प्रकार से विविध शास्त्र समाहित हो रहे हैं। यथा-

1. **धर्मशास्त्र-** उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः इत्यादि अनेक सूत्रों में धर्मशास्त्र का प्रतिपादन हुआ है।
2. **दर्शनशास्त्र-** सद्-द्रव्यलक्षणम्, उत्पादव्ययध्रौव्ययुक् तं सत्, तद्भावाव्ययं नित्यम्, अर्पितानर्पितसिद्धेः इत्यादि अनेक सूत्र दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित हैं। ग्रन्थ के प्रथम, पंचम, दशम अध्याय तो लगभग पूरे ही दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित हैं।
3. **न्यायशास्त्र-** नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः, प्रमाणनयैरधिगमः, नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्द-समभिरूढैवंभूता नयाः इत्यादि अनेक सूत्र न्यायशास्त्र के मूलाधार हैं। न्यायशास्त्र का पूरा प्रासाद इन्हीं सूत्रों पर खड़ा हुआ है।
4. **आचारशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के षष्ठ, सप्तम और नवम अध्याय मुख्यतः आचारशास्त्र का प्रतिपादन करते हैं, क्योंकि इनमें श्रावकाचार और श्रमणाचार का वर्णन हुआ है। यथा- हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्, देशसर्वतोऽणुमहती, तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च इत्यादि।
5. **समाजशास्त्र-** श्रावक के व्रतों, उनके अतिचारों और उनकी भावनाओं के प्रकरण में गहरा समाजशास्त्र भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त भी अनेक सूत्र समाजशास्त्र से सम्बन्धित हैं। यथा- भूतव्रत्यनुकम्पादान-सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य, परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्-गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य, तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यऽनुत्सेकौ चोत्तरस्य, विघ्नकरणमन्तरायस्य इत्यादि।
6. **नीतिशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के सप्तम अध्याय में मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्य-मानाविनेयेषु, ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः इत्यादि कतिपय सूत्रों में सारा नीतिशास्त्र गर्भित है।
7. **शिक्षाशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के सप्तम और नवम अध्याय में ऐसे अनेक सूत्र आये हैं जो शिक्षाशास्त्र से सम्बन्धित हैं। यथा- जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्याऽर्थम्, वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः, इत्यादि।

8. **पर्यावरणविज्ञान-** पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयस्स्थावराः, बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः और अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य इत्यादि अनेक सूत्रों में गहरा पर्यावरणविज्ञान भरा हुआ है|
9. **गणितशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के तृतीय, चतुर्थ और अष्टम अध्यायों में गणितशास्त्र का विस्तृत वर्णन देखा जा सकता है, जहाँ लोक के आकार और कर्मप्रकृति की स्थिति आदि का वर्णन किया गया है | इसके कतिपय सूत्र द्रष्टव्य हैं- द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः, तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः, प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः, दशयोजना वगाहः, तन्मध्ये योजनं पुष्करम्, तद्-द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च इत्यादि|
10. **भूगोल-** तत्त्वार्थसूत्र का तृतीय अध्याय मुख्यतः भूगोल से ही सम्बन्धित है, जिसमें मध्यलोक के असंख्य द्वीप-समुद्रों का वर्णन किया गया है| यथा- भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि, तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः इत्यादि|
11. **खगोल-** तत्त्वार्थसूत्र के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भिक सूत्र मुख्यतः खगोलविज्ञान से ही सम्बन्धित हैं, जिनमें ज्योतिर्लोक और उसके अंग सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि का वर्णन किया गया है | यथा- ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश् च, मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके, तत्कृतः कालविभागः, बहिरवस्थिताः इत्यादि |
12. **ज्योतिष-** तत्त्वार्थसूत्र के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भिक सूत्र जिनमें ज्योतिर्लोक और उसके अंग सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि का वर्णन आया है, ज्योतिषशास्त्र के मूलाधार हैं | यथा- ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश् च, मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके, तत्कृतः कालविभागः, बहिरवस्थिताः इत्यादि |
13. **जीवविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय के अनेक सूत्रों में जीवविज्ञान का गहरा विवेचन पाया जाता है | वहाँ जीव का लक्षण और उसके भेद-प्रभेदों को बड़े ही विस्तार ऐसा स्पष्ट किया गया है कि आज वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य हो | जीवविज्ञान के छात्रों को इसे अवश्य पढना चाहिए | उपयोगो लक्षणम्, स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः, संसारिणो मुक् ताश् च, समनस्काऽमनस्काः, संसारिणस्त्रस-स्थावराः, पृथिव्यप्-तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः, द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः इत्यादि|
14. **वनस्पतिविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय में ही स्थावर जीवों का वर्णन करते हुए कुछ ऐसे सूत्र आये हैं, जिनमें वनस्पतिविज्ञान अन्तर्निहित है| यथा- पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयस्स्थावराः, वनस्प त्यन्तानामेकम् इत्यादि |

15. **शरीरविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय में ही विविध जीवों का वर्णन करते हुए अनेक सूत्र ऐसे आये हैं, जो शरीरविज्ञान से सम्बन्धित हैं, उनमें शरीर के भेद-प्रभेद और उनकी उत्पत्ति आदि सर्व प्रक्रिया पर विशद प्रकाश डाला गया है | यथा- औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि, परं परं सूक्ष्मम्, प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्, अनन्तगुणे परे, अप्रतीघाते, अनादिसम्बन्धे च, सर्वस्य, तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन् नाचतुर्भ्यः, निरुपभोगमन्त्यम् इत्यादि|

16. **इन्द्रियविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय में जीवों का वर्णन करते समय उनकी इन्द्रियों का वर्णन करनेवाले अनेक सूत्र आये हैं, जो इन्द्रियविज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं| उनमें इन्द्रियों के भेद-प्रभेद और उनकी रचना एवं कार्यप्रणाली आदि सर्व प्रक्रिया पर अद्भुत सामग्री उपलब्ध होती है | यथा- पञ्चेन्द्रियाणि, द्विविधानि, निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्, लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्, स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि, स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः इत्यादि|

17. **मनोविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय में जीवों की इन्द्रियों का वर्णन करते समय कुछ सूत्र ऐसे आये हैं, जो मनोविज्ञान से सम्बन्धित हैं, उनमें मन के द्रव्यमन और भावमन इन दो भेदों को भलीभांति स्पष्ट किया गया है| इसके अतिरिक्त मन के विविध भावों का चित्रण करनेवाले भी अनेक सूत्र तत्त्वार्थसूत्र में पाए जाते हैं | यथा- दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडश-भेदाः,
सम्यक्त्व-मिथ्यात्वतदुभयाऽन्यकषायकषायौ हास्यरत्यऽरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन् नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश् चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः इत्यादि|

18. **मृत्युविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के सप्तम अध्याय में मृत्युविज्ञान पर भी विशद प्रकाश डालनेवाले कतिपय गम्भीर सूत्र उपलब्ध होते हैं | यथा- मारणान्तिकीं सल् लेखनां जोषिता, जीवितमरणाशंसामित्राऽनुराग-सुखाऽनुबन्धनिदानानि इत्यादि|

19. **प्रतिमाविज्ञान-** तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय का निक्षेपविषयक यह सूत्र ही वास्तव में प्रतिमाविज्ञान का मूल उत्स है- नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः|

20. **ध्यानशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के नवम अध्याय में अनेक सूत्र ऐसे आये हैं जो ध्यानशास्त्र के मूलाधार हैं | यथा- उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमाऽऽन्तर्मुहूर्तात्, आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि, परे मोक्षहेतू, आर्त्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः, विपरीतं मनोज्ञस्य, वेदनायाश् च, निदानं च, तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम्, हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः, आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्, शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः, परे केवलिनः,

पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि, त्र्यैकयोगकाययोगाऽयोगानाम्, एकाऽऽश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे, अवीचारं द्वितीयम्, वितर्कः श्रुतम्, वीचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः इत्यादि|

21. **भौतिकशास्त्र-** तत्त्वार्थसूत्र के पंचम अध्याय में भौतिकविज्ञान पर प्रकाश डालनेवाले कतिपय गम्भीर सूत्र उपलब्ध होते हैं | यथा- अणवः स्कन्धाश् च, भेदसंघातेभ्य उत्पद्यन्ते, भेदादणुः, भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः, सद्-द्रव्यलक्षणम्, उत्पादव्ययध्रौव्ययुक् तं सत्, तद्भावाऽव्ययं नित्यम्, अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः, स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः, न जघन्यगुणानाम्, गुणसाम्ये सदृशानाम्, द्व्यऽधिकादिगुणानां तु, बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च इत्यादि|

इस प्रकार यहाँ मैंने तत्त्वार्थसूत्र में निहित कतिपय विविध शास्त्रों को दर्शाने का एक लघु प्रयास किया है| हो सकता है कि आपको इसमें कुछ और भी शास्त्र दिखाई देते हों, आप कृपया उन्हें भी इनमें जोड़ लीजिए और तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन-अध्यापन में गम्भीरतापूर्वक प्रवृत्ति कीजिए -यही मेरा विनम्र अनुरोध है|

तत्त्वार्थसूत्र में निहित विविध शास्त्रों को देखकर एक विशेष बात मुझे यह भी समझ में आती है कि दर्शनशास्त्र की सीमा वास्तव में बहुत व्यापक है, उसकी सीमा में क्या नहीं आता, सभी शास्त्र उसी की सीमा में समाहित हैं, तभी तो तत्त्वार्थसूत्र जो यद्यपि दर्शनशास्त्र का ग्रन्थ कहा जाता है, परन्तु फिर भी उसमें भूगोल, खगोल, गणित, ज्योतिष, जीवविज्ञान, शरीरविज्ञान, मनोविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, भौतिकविज्ञान जैसे विषय भी आये हैं | वर्तमान में दर्शनशास्त्र का अर्थ केवल दर्शनशास्त्र ही समझा जाता है -यह ठीक नहीं है| यह तो उसे बहुत संकीर्ण कर देना है| इससे दर्शनशास्त्र की प्रगति अवरुद्ध होती है| अतः दर्शनशास्त्र में विविध शास्त्रों को समाहित समझकर प्रत्येक दार्शनिक को इनका भी ज्ञान अवश्य करना चाहिए|